Research Scholars of Prof. Vineet Ghildial :

1. Name of the Scholar : Mahesh Dutt Uniyal
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 24.02.2004
Date of Ph.D. Completion : 21.02.2009
Topic of Research : श्रीमद्भागवद् महापुराण में भक्ति–मीमांसा

Abstract

पुराणों में श्रीमद्भागवत् पुराण भक्ति–सिद्धान्त का स्थापक परमोत्कृष्ट ग्रन्थ–रत्न है। इसी कारण मनीषियों ने इसे भक्ति–शास्त्र के विशाल अक्षय कोष के रूप में मान्यता दी है। इसमें श्रवण, कीर्तन, स्मरण आदि नवधा भक्ति–निरूपण के साथ ही सगुण, निर्गुण, सात्त्विक आदि अनेक दृष्टि से भक्ति–भेदों का सूक्ष्म विवेचन प्राप्त होता है। इसके साथ ही भक्ति में साधन और साध्य पर भी पर्याप्त विचार किया गया है। श्रीमद्भागवद् महापुराण में श्रीकृष्ण को भगवद्–भक्ति के सर्वतोमधुर आलम्बन के रूप में चित्रित किया गया है। श्रीमद्भागवद् द्वारा प्रतिपादित भक्ति–तत्त्वों ने जहाँ एक ओर भारतीय समाज एवं संस्कृति को प्रभावित किया है, वहीं दूसरी ओर साहित्य पर भी इसका पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगत होता है। भारतीय भाषाओं के वैष्णव भक्ति–साहित्य का प्रमुख प्रेरणा–स्रोत श्रीमद्भागवद् महापुराण ही है। वस्तुतः श्रीमद्भागवद् पुराण में भक्ति–तत्त्व अत्यन्त विस्तृत एवं विशिष्ट हैं। भक्ति से सम्बन्धित इन्हीं विविध तत्त्वों की प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में अनेक दृष्टि से युक्ति युक्त मीमांसा की है।

2. Name of the Scholar : Suman Kumar Jha
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 10.04.2006
Date of Ph.D. Completion : 22.01.2009
Topic of Research : वाल्मीकिरामायणे उत्तररामचरिते च सीताया आदर्शगुणाः

Abstract

वैदिकसाहित्यानन्तरं सर्वप्रथममादिकविवाल्मीकिविरचिते रामायणमहाकाव्ये लौकिकसाहित्यस्य रमणीयं स्वरूपं दरीदृश्यते। तत्र वर्णितानां नारीपात्राणां दिव्यजीवने सर्वेऽपि वैदिकादर्शगुणाः प्रत्यक्षीकर्तुं शक्यन्ते। महाकविभवभूतिः रामायणकालिकनारीणां जीवनमूल्यानामाधारं स्वीकृत्य स्वकृतिषु तत्सर्वं यथायोग्यं स्थानं दत्तवान्। भवभूतिविरचितस्य उत्तररामचरितनाटकस्याध्ययनेन सुस्पष्टम्भवति यत् वाल्मीकिरामायणवतत्रापि सीतायाः तथैव आर्दशगुणा वर्णितास्सन्ति। सीताया रूपसौन्दर्यशीलादीनां, शिष्टता–विनयशीलता–तर्कशक्ति–तेजस्विता–साहसनिर्भीकताऽऽदिगुणानां करुणदशादीनाञ्च वर्णनं वाल्मीकिरामायणे भवभूतेरुत्तररामचरिते चाविशेषेणेतस्ततः

परिलक्ष्यते। शोध–प्रबन्धेऽस्मिन् सीतायाः समस्तानामादर्शगुणानां, रामायणकालिकनारीजीवनस्य, नारीधर्मस्य, समाजव्यवस्थायाः, नारीं प्रति समाजस्य दृष्टेर्कवेश्च नारीविषयक–चिन्तनादीनां विशद् वर्णनमेकत्रैव कृतमस्ति।

3. Name of the Scholar : Rajesh Sharma
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 18.04.2006
Date of Ph.D. Completion : April 2011
Topic of Research : पुराणोक्त व्रतपर्वोत्सवों का विवेचनात्मक-अध्ययन

Abstract

पौराणिक धर्म में भक्ति की प्रधानता रही है। तात्त्विक दृष्टि से व्रत, पर्व और उत्सव में भेद है तथापि भारतीय व्रतपर्वोत्सवों में कोई भी ऐसा नहीं है, जिसके मूल में धार्मिक भावना न हो। प्रायः सभी व्रतपर्वोत्सवों के मूल में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएं भी रही हैं। उनके स्मरण में भी जनसमुदाय व्रत लेकर प्रेरणा लेते हैं, उत्सव मनाते है। उत्सवों से परम्परा एवम् आत्मविश्वास दृढ़ होता है। पुराणों में रोचक आख्यानों द्वारा व्रतपर्वोत्सवों के प्रति लोगों की रूचि एवम् उत्साह बढ़ाने का कार्य किया गया है। इन व्रतपर्वोत्सवों के अनुष्ठान का प्रत्यक्ष फल था–शरीर तथा मन की शुद्धि। शरीर तथा मन अन्योन्याश्रित हैं। इन अनुष्ठानों का सात्त्विक वातावरण मन एवं शरीर–दोनों को ही निर्मल बनाने में समर्थ था। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में पुराणोक्त व्रतपर्वोत्सवों का सर्वाङ्गपूर्ण विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हुए उनका सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा मनोविनोद आदि की दृष्टि से महत्त्व भी प्रतिपादित किया गया है।

4. Name of the Scholar : Baldev Prasad Chamoli
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 10.04.2006
Date of Ph.D. Completion : 08.04.2013
Topic of Research : वाल्मीकिरामायण में पर्यावरणीय सन्दर्भों की विवेचना

Abstract

वाल्मीकिरामायण लौकिक संस्कृत साहित्य का प्रथम काव्य है। आदि कवि महर्षि वाल्मीकि मनस्तत्त्व के निरूपण के साथ–साथ बाह्य प्रकृति के असाधारण सुन्दर चित्रण में भी निष्णात थे। रामायण में प्रकृति–चित्रण के विभिन्न प्रसङ्गों में नगर, ग्राम, वन, उपवन, आश्रम, सर–सरोवर, नदी, पर्वत, ऋतुचक्र, चन्द्रोदय, सूर्योदय आदि का सरस एवं सजीव चित्रण उपलब्ध होता है। कथानक के प्रवाह में आए हुए इन प्रसङ्गों में प्रकृति का चित्रण सहज रूप में अनायास ही अवतरित होता चला गया है, जिसमें महर्षि का पर्यावरणीय चिन्तन–सम्बन्धी दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इसके साथ ही, वाल्मीकि ने रामादि उदात्त पात्रों के चरित्र–चित्रण द्वारा समाज में सद्

वृत्तियों का आदर्श मानदण्ड प्रस्तुत किया है, जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण–संरक्षण की आधार–भूमि स्थापित करता है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में वाल्मीकि–रामायण में उपलब्ध विविध प्रसङ्गों के आधार पर पर्यावरणीय सन्दर्भों की सर्वाङ्गपूर्ण विस्तृत विवेचना की गई है।

5. Name of the Scholar : Km. Shanti Gusain
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 02.06.2009
Date of Ph.D. Completion : 30.05.2016
Topic of Research : धर्मशास्त्रों में नारी की स्थिति (याज्ञवल्क्य स्मृति के विशेष सन्दर्भ में)

Abstract

वेद भारतीय ज्ञान–गङ्गा के उत्स हैं। हमारे महर्षियों ने वैदिक विज्ञान को सर्वसाधारणोपयोगी बनाने के लिए धर्मशास्त्रों का निर्माण किया। भारतीय धर्मशास्त्र में वैदिक धर्मसूत्रों के साथ ही स्मृति–ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में धर्मशास्त्रों के आधार पर, और विशेष रूप से याज्ञवल्क्य स्मृति के सन्दर्भ में, नारी के विविध स्वरूपों के विवेचन के साथ ही नारी–शिक्षा, विवाह, नारी के साम्पत्तिक अधिकार तथा स्त्रीधन आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। नारी के दायाधिकार के सन्दर्भ में धर्मशास्त्रों एवम् अर्वाचीन व्यवस्था की तुलना भी की गई है। साथ ही, नारी और मानवाधिकारों पर भी विस्तृत चर्चा की गई है। वस्तुतः धर्मशास्त्रों में नारी सम्बन्धी जो विचार, विधि अथवा व्यवस्था प्राप्त होती है, उसमें मानवाधिकारों की चेतना भी स्पष्ट दिखाई देती है। साथ ही, कहीं–कहीं मानवाधिकारों के हनन के सन्दर्भ भी प्राप्त होते हैं, जिनका कारण मुख्यतः तत्कालिक सामाजिक एवम् आर्थिक परिस्थितियाँ थीं।

6. Name of the Scholar : Manisha Kashyap
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 23.02.2011
Date of Ph.D. Completion : 22.02.2017
Topic of Research : संस्कृत वाङ्मय में हिमालयीय पर्यावरण

Abstract

संस्कृत वाङ्मय जीवन के आध्यात्मिक पक्ष के चित्रण के साथ ही लौकिक अथवा भौतिक पक्ष को भी समान रूप से चित्रित करता है। वैदिक संहिताओं, ब्राह्मण–ग्रन्थों आदि में ऋषियों के हिमालय (हिमवन्त), उसके जीव–जन्तुओं तथा भीतर–बाहर होने वाली प्राकृतिक घटनाओं से सम्बन्धित ज्ञान के सङ्केत मिल जाते हैं। परवर्ती संस्कृत साहित्य में तो हिमालय का समूची गरिमा एवम् उदात्त वैभव के साथ अति विशद् वर्णन प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में संस्कृत वाङ्मय में उपलब्ध विविध सन्दर्भों के आधार पर हिमालय की तत्कालिक भौगोलिक,

सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का विवेचन करते हुए हिमालय के पर्यावरणीय अवयवों, तत्कालिक हिमालय की पर्यावरणीय आपदाओं तथा हिमालय के पर्यावरण–संरक्षण सम्बन्धी विविध बिन्दुओं पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। साथ ही वर्तमान में हिमालयीय पर्यावरण–संरक्षण हेतु प्राचीन संस्कृत वाङ्मय की उपादेयता भी सिद्ध की गई है।

7. Name of the Scholar : Chandra Shekhar Bhatt
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 20.03.2014
Date of Ph.D. Completion : 16.03.2020
Topic of Research : गृह्यसूत्रों का विवेचनात्मक-अध्ययन

Abstract

वेदार्थ के सम्यग्ज्ञान के लिए कल्पसूत्र वेदाङ्ग का अतिशय महत्त्व है। कल्पसूत्र मुख्यतः चार प्रकार के हैं– श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र तथा शुल्वसूत्र। गृह्यसूत्रों में उन समस्त याज्ञिक कर्मों एवं संस्कारों का वर्णन है, जिनका सम्बन्ध मुख्यतः गृहस्थ से है। इनके अतिरिक्त सामाजिक आचारों, विविध जीवनोपयोगी तथा काम्यादि कर्मों का वर्णन भी गृह्यसूत्रों में प्राप्त होता है। वस्तुतः गृहसूत्रों को हम गृहस्थाश्रम की आचार–संहिता कह सकते हैं। एक सुव्यवस्थित, सोद्देश्य जीवन का जो आदर्श रूप गृह्यसूत्रों में प्राप्त होता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस व्यवस्था को हम रूढ़िवादी जीवन की संज्ञा नहीं दे सकते, कारण कि वह जीवन जिन लक्ष्यों पर आधारित है, वे लक्ष्य शाश्वत हैं। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में गृह्यसूत्रों की सर्वाङ्गपूर्ण विस्तृत विवेचना की गई है। साथ ही, गृह्यसूत्रों में उपलब्ध कतिपय ऐसे विवेच्य विषयों को भी उद्घाटित किया गया है, जो निःसन्देह विचारणीय हैं तथा स्वतन्त्र रूप से शोध का विषय हैं।

8. Name of the Scholar : Shruti Meemansa
Name of the Supervisor : Prof. Vineet Ghildial
Date of Ph.D. Registration : 14.07.2015
Date of Ph.D. Completion : 22.12.2020
Topic of Research : महाभारत में पर्यावरणीय सन्दर्भों की विवेचना

Abstract

प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा हिन्दूधर्म का जैसा वैविध्यपूर्ण चित्रण महाभारत में उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र किसी ग्रन्थ में दुर्लभ है। वस्तुतः महाभारत एक ऐसा बृहत्काय महाकाव्य है, जिसे विश्वकोष कहा गया है। महाभारतकार महर्षि वेदव्यास की यह घोषणा कि–‘यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्’ अक्षरशः

सत्य है, और यही कारण है कि महाभारत में पर्यावरणीय सन्दर्भ भी अनेकत्र ढूँढे जा सकते हैं। सभी भूततत्त्वों का अन्योऽन्याश्रितत्व वहाँ स्पष्टतः उल्लिखित है। महाभारत के पुण्यकार्य धार्मिक कर्मकाण्ड मात्र नहीं हैं। युद्धजन्य विनाश की पूर्ति–हेतु वृक्षारोपण, तडाग–निर्माणादि कार्यों को वहाँ पवित्रकर्म कहा गया है, नदियों को 'विश्वमातरः' तथा पर्णफलान्वित वृक्ष को 'चैत्य'। प्राकृतिक पर्यावरण–संरक्षण के साथ ही अन्याय, अत्याचार, असत्य और अधर्म आदि के मार्ग पर चलने का दुष्परिणाम दिखाकर मानव को न्याय, सदाचार, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई है, जो सामाजिक–सांस्कृतिक पर्यावरण–संरक्षण की दृष्टि से न केवल वर्तमान में, अपितु प्रत्येक काल में प्रासङ्गिक है।